मंथन

प्रणेता :

श्रुतप्रिय श्रमण 108 अप्रमितसागर जी

प्रकाशक

समर्पण समूह

जैनं वचनं सदा वंदे

◆ आशीषानुकंपा : श्रमणाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी

◆ प्रणेता : श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी

◆ संपादक : श्रुतसंवेगी श्रमण 108 आदित्यसागर जी

◆ सहयोग : सहजानंदी श्रमण 108 सहजसागर जी

◆ कृति का नाम : मंथन

◆ संस्करण : प्रथम 1100 (2021)

◆ द्वितीय : 3000 (2023)

◆ प्राप्ति स्थान एवं प्रकाशक : समर्पण समूह
भोपालः 91790-50222
जबलपुर : 98276-07171
इन्दौर : 98260-10104
इन्दौर : 94253-16840
भीलवाड़ा (राज.) : 63766-49881

◆ आकल्पन एवं मुद्रण : डीसेन्ट ग्राफिक्स
सुभाष चौक कार पार्किंग, राजबाडा, इंदौर
मो. 98260-14047

शुभाशीष

भारत भूमि अनादिकाल से श्रमण-संस्कृति एवं दिगम्बर वीतरागी श्रमणों की पदरज से पावन है। इसी भूमि पर तीर्थंकर भगवन्तों ने जन्म लिया तथा इसी पर श्रीराम आदि बलभद्रों ने जन्म लिया और स्व-पर का कल्याण मार्ग प्रशस्त किया है।

महान् - महान् साहित्य रचनाओं का बहुमान भी भारत भूमि को प्राप्त है। ''सम्प्रति में भी साहित्य सृजन चल रहा है। साहित्य वही श्रेष्ठ है, जो पाठक एवं लेखक दोनों के हितार्थ हो।''

अन्तेवासी मुनिश्री अप्रमितसागर जी ने अपनी आत्म-साधना के क्षणों को निकालकर **''मंथन''** कृति का सृजन किया है, आपकी श्रुताराधना एवं आत्म-साधना को देखकर जन-जन का हृदय मुदित है, आप इसी प्रकार श्रीजिनशासन जिन भारती की आराधना करते रहें, यही शुभाशीष...।

पावन वर्षायोग
बड़ौत (उ.प्र.) भारत
23 अगस्त 2023

- श्रमणाचार्य विशुद्धसागर

मेरा मंथन

जीवन सफल बनाने के लिये सबसे आसान, सरलतम उपाय एक ही है वह है **''मंथन''**।

कहा भी गया है कि ''बिना **मंथन** के तो मक्खन भी नहीं निकलता।'' ऐसे ही जब तक आप स्व-विचारों के साथ **'मंथन'** नहीं करेंगे, तब तक सम्यक् चिंतन रूपी मक्खन नहीं निकल सकता। इसलिये कुछ करने के पहले **'मंथन'** जरूर करें, जिससे सम्यक् फल मिलें।

मम दीक्षा शिक्षा गुरू **आचार्यरत्न विशुद्धसागर जी महाराज** की आशीष अनुकंपा से और मेरे अग्रज **पूज्य मुनिवर आदित्यसागर जी महाराज** वात्सल्य के साथ मुझ अल्पज्ञ ने यह **'मंथन'** नामक कृति का सृजन किया है।

आशा है आप सभी को यह कृति जीवन में अनेकानेक परिवर्तन के साथ नया जीवन बनाने में सार्थक होगी। यही मेरी भावना है।

17-7-201
सिवनी (म.प्र.)

विशुद्धगुणाकांक्षी
श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर

मंथन

ज़िंदगी में

एक न एक

लक्ष्य बनाकर चलिये,

अन्यथा

ज़िंदगी यूँ ही गुजर जायेगी !!!

मंथन

अब तो
आदत–सी हो गई है मुझे
उन्हें याद करने की
जिनसे मुझे चाहत है,
क्यों करता हूँ ऐसा मैं ?
तो जबाब मिलता है
राहत मिलती है मुझे !!!

मंथन

सिलसिला तो ये
यूँ ही चलता रहेगा
ये तो मौसम है
यूँ ही बदलता ही रहेगा
चलते रहना
घबराना नहीं मेरे दोस्तो !
मंज़िल पर पहुँचने के लिये
अड़चनों का सामना तो
करना ही पड़ेगा !!!

मंथन

बदल गयी ज़िंदगी हमारी
मिलकर उनसे
कहा उन्होंने
बदलो स्वयं को
स्वयं के चिंतन से
किया जब हमने ऐसा तो
गये वो भी हमारे चिंतन से !!!

मंथन

वक्त पर काम करते
तो वक्त तुम्हारा होता,
पर
तुम कमवक्त निकले
इसीलिये तो
ये वक्त तुम्हारा इम्तहान लेता !!!

मंथन

जरूरत नहीं है
फल पाने की इच्छा की जाये
अच्छाइयाँ स्वयमेव
अपना रास्ता ढूँढ़ लेती हैं,
लेकिन
उसके लिये आवश्यक है
आपके काम अच्छे होना चाहिए !!!

मंथन

जाने के बाद किसी के,
फूलों की माला तो सभी चढ़ाते हैं,
परन्तु
याद वही लोग किये जाते हैं
जो शूलों सा नहीं
फूलों सा जीवन जीकर जाते हैं !!!

मंथन

टूटता है
जब भरोसा तुम्हारा किसी से
तो समझना
उसकी ही उसी से,
किस्मत रुठी है
क्योंकि
भरोसेमंद वो नहीं,
हम थे !!!

मंथन

चिंता नहीं मुझे
इस बात की कि –
जाने कोई मुझे
अपितु
चिंता तो इस बात का है कि –
जानने वाले ही
नहीं जान रहे हैं मुझे !!!

मंथन

जरूरतें पूरी करते थे
जो पहले तुम्हारी,
अब उन्हें तुम्हारी जरूरत है,
तो जरूर चले जाना
मना न करना
यही तुम्हारी ज़िंदगी की शोहरत है !!!

बातें बदलने की
सभी बताते हैं
पर
बदल वही पाते हैं;
जो उन बातों को
आचरण में लाते हैं !!!

मंथन

दुःख इस बात का है हमें कि
पहले के जमाने में
इंसान,
इंसान से प्रेम
और
पैसों का उपयोग करता था,
पर
अब जमाना बदल गया है
जहाँ इंसान
इंसान का उपयोग
और
पैसों से प्रेम करने लगा है !!!

मंथन

कुछ नया सीखने के लिये
सुनना जरूरी है,
कह पाये तुमसे कोई कुछ न
तो जवाब देना जरूरी है,
अगर सह सकते हो
दूसरों की बातों को
तो चुप रहना जरूरी है !!!

मंथन

अफसोस मत करो कि –
हमें ज्यादा नहीं मिला,
सोचो जरा !
उन लोगों के बारे में
जिन्हें नसीब में
रहने को मकान,
पहनने को कपड़ा भी नहीं मिला !!!

मंथन

बेहतर है
समझदारी से काम करो,
अन्यथा
दुनिया बहुत समझदार है
वो तुम्हें चराकर चली जायेगी !!!

मंथन

तकदीर हमारी अच्छी है
जो आँखों में
तस्वीर तुम्हारी झलकती है
और
तस्वीर तुम्हारी अच्छी है
जो तकदीर हमारी बदलती है ।।।

मंथन

बहुत कुछ मिला
ज़िंदगी में हमें,
पर
कुछ अभी बाँकी है
जो कि सब कुछ है ;
वह है केवल और केवल
संतोष !!!

मत बनाओ फितरत ऐसी कि
कोई तुमसे नफ़रत करे,
अपितु
बनाओ फितरत ऐसी कि
नफ़रत करने वाला भी कह उठे
नहीं करना है अब
ये नफ़रत मुझे !!!

मंथन

सारी दुनिया खुश रहती है उन पर
जो उनसे खुश रहते हैं ,
पर सुनो !
तुम कुछ हटकर दिखाओ यूँ कि
खुश रहो तुम उनसे भी
जो नाखुश हैं तुमसे
इस दुनिया में !!!

भरोसा हम उसी पर करते हैं
जो दगा देता है,
सच कहूँ तो
वह कोई और नहीं
अपना सगा ही होता है !!!

दुःख, इस बात का नहीं हमें कि-
यहाँ हर चीज़ बिकाऊ है
और
हर चीज़ की कीमत है
अपितु
दुःख, इस बात का है कि
अब तो लोग
इंसान को भी बिकाऊ बनाकर
उसकी कीमत आँक रहे हैं !!!

मंथन

वो सपने बहुत अच्छे हैं
भले पूरे न हो
तनिक सुख तो देते हैं,
पर
वो अपने अच्छे नहीं ;
क्योंकि
जो सपने बताने पर
उन्हें हमसे दूर करते हैं !!!

मंथन

जो साफ है
उसे साफ न करो,
अपने ऊपर इंसाफ करो,
माँ जिनवाणी कह रही है
सभी को माफ करो,
कर्म ही तेरे भीतर है
उन्हें साफ करो !!!

मंथन

मिल गये दूध पानी की तरह
हम उनसे,
पर
मिले नहीं ;
अब इंतज़ार है तपाने का
दूध से पानी को अलग हटाने का,
तब मिलेंगे हम उनसे
जो किसी से मिले नहीं ।।।

मंथन

एक इंसान
अपनी गलती न होने पर भी
यदि माफी माँग रहा हो,
तो समझना
या तो उसे आपसे उम्मीदें हैं
या फिर
वह आपको खोना नहीं चाहता ।।।

मंथन

नफ़रत नहीं हमें उनसे
जो हमसे नफ़रत करते हैं,
क्योंकि
अब हमें फुरसत नहीं है उनसे
जो हमारी फिक्र करते हैं !!!

मंथन

दुनिया में कोई भी काम
ऐसा नहीं, जो कठिन हो
सभी काम बहुत आसान है,
उसके लिये आपको
उचित समय का चुनाव
और
मन को मनाने की जरूरत है !!!

मंथन

दुनिया उन्हें गरीब कहती है
जिनके पास धन नहीं
और
अमीर उन्हें
जिनके पास धन की कमी नहीं,
पर,
हमारा मानना है कि-
वे लोग ही अमीर हैं
जिनके पास धन भले ही नहीं ;
पर
दिल में जगह है हर किसी के लिये !!!

मंथन

आप अपनी दृष्टि
ऊँट की तरह न बनाये,
जो फूलों और फलों को
छोड़कर काँटों को ग्रहण करता है !!!

मंथन

रास्ता बदलना
सिखा दिया है उनने हमें,
जो मुसीबत में साथ दिया करते थे,
अब वे किसी और के साथ में रहते हैं !!!

मंथन

लहर आती हो
अशुभ भावों की
तो एक बार जरूर सोच लेना,
ये आपके
आगामी सुख को हरने आई है !!!

अपना दोष
सुमेरु के बराबर भी हो
तो राई–सा जान पड़ता है
और
दूसरों का
राई के बराबर भी हो
तो सुमेरु–सा जान पड़ता है
किसे ?
उन्हीं लोगों को
जिनका स्वभाव दुर्जन – सा
होता है!!!

मंथन

दुर्जन और काँटे में
एक समान गुण होता है,
उनका संसर्ग पाकर
दुःख ही मिलता है ;
यह आप जानते ही हैं
फिर क्यों न उनसे
दूर रहा जाये ॥॥

देखा है हमने लाखों को
जो उनके पास रहते थे,
पर
साथ में रह गये वही ;
जो उनके पास नहीं
स्वयं के साथ रहते थे **!!!**

मैथन

होती क्षणिक,
पर
यादों में रह जाती,
कीमत नहीं,
पर
बहुत कुछ कह जाती,
घटता कुछ भी नहीं,
पर
खुशहाल कर जाती
जो चेहरे पर आपके
मुस्कान आ जाती ।।।

भूल जाते हैं लोग
नये के आने पर पुरानों को,
पर
भूल जाते हैं वे लोग
कि वे भी तो कभी पुराने होंगे !!!

असफल होते वही
जो सोचते हैं,
मगर करते नहीं
और
करते हैं
मगर सोचते नहीं !!!

मंथन

जीओ पलकें झुकाकर
लोग पलकों पर रखेंगे,
जीओ सरलता का जीवन
लोग सरल कहेंगे,
अन्यथा की प्रवृत्ति
लोग पलकों में तो दूर रहा
वो अपनी जुवां पर भी न रखेंगे !!!

मंथन

क्या समय आ गया है
पर के लिये दुनिया
पर को छोड़ देती है,
लेकिन
स्वयं के लिये
पर को नहीं !!!

मत जाओ
मदद माँगने किसी से,
मुसीबत तो कुछ दिनों की है
अन्यथा
एहसान ये ज़िंदगी भर रहेगा !!!

मंथन

भविष्य की सोचकर
भविष्य बिगाड़ता है आदमी,
वर्तमान को न सुधारकर
भविष्य में रोता है आदमी,
अभी का सुख न भोगकर
भविष्य का दुःख जोड़ता है आदमी,
होश आ जाये कि कुछ भी नहीं है
इस धरती पर उसका
तो सब कुछ छोड़ देता है आदमी !!!

अमीर हो या फिर गरीब
सबके पास पायेंगे,
मेहनत नहीं करना पड़ती है
इसके लिये,
जब आप एक-दूसरे को
देखकर मुस्कुरायेंगे !!!

जीता वही
जो जीतकर भी न रूका,
हारा वही
जो थककर जा रूका !!!

माँगने जाते हैं उससे हम
जिसके पास कुछ भी नहीं ,
एक बार उसे ही माँग लिया होता
तो सब कुछ मिल जाता वहीं !!!

मंथन

न बनाओ रिश्ते उनसे
जो मिलने से इन्कार करें,
अपितु
बनाओ उनसे
जो मिलने का इंतज़ार करें !!!

भूल सकता है
सब कुछ इंसान,
पर,
उन लम्हों को नहीं
जो अपनों के साथ गुजारे थे !!!

मंथन

कमियाँ तो
बहुत हैं हमारे भीतर
पर
एक अच्छाई भी है
हम रिश्ते
मतलब के लिये नहीं बनाते !!!

गरीबी का एहसास
उन्हें ही होता है,
जो धन से नहीं,
मन से गरीब हैं
फिर चाहे वो अमीर ही
क्यों न हो !!!

मंथन

पूछ लेना डरना नहीं
डरा तो परायों से जाता है,
अपनों से नहीं
और
डर गये अपनों से
तो अपने भी पराये होने में
देर लगेगी नहीं !!!

मंथन

चले जाने का वादा तो
कई बार किया उनने हमसे,
पर
निभाया एक बार भी नहीं ;
क्योंकि
वो हमारे दिल से कभी
गये ही नहीं !!!

मंथन

एक के लिये
अनेकों को दुःख दिया
सोचता रहा कि-
सुख मिलेगा,
पर
बदले में दुःख ही लिया !!!

मंथन

दूसरे की तारीफ से
आपको तकलीफ होती है,
तो वह आपकी ही गलती है
आप उस लायक क्यों नहीं बने !!!

मंथन

कदम उठाया था साथ में,
मगर
वो आगे निकले गये ;
शायद
किस्मत में
इतना ही साथ लिखा था मेरे !!!

मंथन

आज अच्छा मिला
तो कल का बुरा भूल गये,
लेकिन
ये भूल है तुम्हारी,
अब अच्छा मिलने पर
बुरा भी याद रखो
और
अच्छा कार्य करो
जिससे आगे अच्छा ही अच्छा हो !!!

मंथन

सपने भी अपने नहीं
जो पलक खोलते ही चले जाते,
फिर भी न जानें
लोग
क्यों सपने सजाते !!!

मंथन

इतना किया
इतना किया
सबके लिये सब कुछ किया,
पर
अपने लिये इतना-सा भी न किया ;
इसीलिये तो
भटकता रहा
भव-भव में ये जिया !!!

मंथन

दूर रहकर भी याद आते हैं
न जानें कितना सताते हैं,
फिर भी याद आते हैं
क्या करें ?
ज़िंदगी तो उन्होंने ही दी है
इसीलिये
हम उन्हें नहीं भूल पाते हैं !!!

मंथन

रास्ता मिला तो
चलते रहे हम,
कदम–कदम पर
फिसलते रहे हम,
संभाला उन्होंने,
साथ चल रहे थे जिनके हम,
कहा उन्होंने, रास्ता भले ही कठिन हो
आसान कर देंगे हम,
बस
नहीं छोड़ना विश्वास अपना,
चाहे निकल जाये दम ।।।

मंथन

जीना मरना खेल है
इस दुनिया का,
पर
जीतता तो वही है
जो मरकर नहीं
जीकर जीता है !!!

मंथन

गुणग्रहण की दृष्टि
अपनाना सीख लो उस गाय से
जो खाती तो बहुत कुछ है ;
परंतु
देती दूध ही है !!!

मंथन

सुख-शांति का भण्डार
उसे ही,
मिल सकता है
जो हंस की तरह
जीवन जीता है ;
जो पीता दूध ही है
पानी छोड़ देता है !!!

अवगुण
नौका में छिद्र के समान है,
जो इसे भर लेता है
फिर उसकी नौका
कभी डूबती नहीं ;
भरो इसे !!!

मंथन

फूल कभी नहीं कहते
भ्रमरों से
मेरे पास आओ,
उनमें सुगंध होती है
तो भ्रमर स्वयमेव आते हैं ;
ऐसे ही आप
अपने भीतर गुणों की सुगंध ले आओ,
लोग आपके चारों और झूमेंगे !!!

मंथन

लोग कहते हैं
बूंद-बूंद से घड़ा भर जाता है,
फिर क्यों न
आत्म घट को
प्रतिदिन एक-एक गुण
ग्रहण करके भरा जाये !!!

मंथन

समस्त कीर्ति का सम्राट्
वही बनता है,
जो छिद्रान्वेषी नहीं,
गुणान्वेषी होता है !!!

मंथन

रास्ता भटकते हैं हम
और कहते हैं
लोगों ने हमें भटका दिया
यही कारण है
हम अपनी गलतियाँ
स्वीकार नहीं पाते !!!

मंथन

परिवार भले ही
एक क्यों न हो,
परंतु
सबका भाग्य
अलग-अलग ही होता है ;
तभी तो कोई दुःखी
तो कोई सुखी होता है !!!

न जानें ये दुनिया कैसी है ?
जो पर के लिये
अपनों को
और
अपने को छोड़ देती है,
इसलिये
दुःखों से अपने को जोड़ लेती है !!!

बनाओ कुछ मिज़ाज़
अपना ऐसा कि लोग कहें –
आप चले जरूर जाओगे,
लेकिन
हमारे दिल से कहाँ जाओगे !!!

मंथन

आज तक साफ करते रहे
इंसान उन्हें
जिन पर लोगों की नज़र होती है,
पर
नहीं किया साफ उस दिल को ;
जिस पर ऊपर वाले की नज़र होती है !!!

जरा संभलकर जीना मेरे दोस्तो !
दिल में उतरने वाले लोग भी
दिल से उतर जाते हैं !!!

अंदाज़

कुछ इस तरह का हो तुम्हारा,
भले ही आप आगे निकल जाये ;
पर
मित्र कोई भी पीछे न छूटे !!!

मंथन

लोग कहते हैं
कुदरत ने बहुत दुःख दिया है हमें,
लेकिन
हमारा मनाना है
फुरसत ही नहीं उन लोगों को
अपना सुख पाने की ;
क्योंकि
वे पर के सुख के लिये ही जी रहे हैं !!!

मंथन

दिल दु:खाये कोई
तो बुरा न मानना,
क्योंकि
सच ही कहा जाता है
जिस पेड़ पर मीठे फल लगते हैं
उसी पर पत्थर पड़ते हैं !!!

न कहना भी सीखिये,
क्योंकि
कई बार हम कह तो देते हैं कि
हम यह काम कर देंगे ;
पर
नहीं कर पाने पर
केवल हमारे पास
पश्चाताप ही शेष रह जाता है !!!

आप इतना वात्सल्य लुटाओ कि
ईर्ष्यालु भी कहने लग जायें,
काश !
हम भी इनके साथ होते ।।।

मंथन

दुनिया इक बाज़ार की तरह है
जिसमें दिमाग लगाकर जीना,
पर सुनो !
इसे घर में न लगाना
वहाँ इक परिवार है
उसमें दिल लगाकर जीना ॥

मंथन

दोष हो जाये किसी से
तो उज़ागर न करो,
बस इतना जरूर प्रयास करो
वह दोष हमसे न हो ।।।

मंथन

सुना भी लिखा भी और पढ़ा भी
कई बार,
पर लखा नहीं इक भी बार कि-
दोष ग्रहण से नहीं होंगे भव पार
फिर भी न जाने क्यों करता है
वही अपराध बार-बार ;
इसलिये सुनो
करो ग्रहण गुण एक बार
और
हो जाओ भव पार !!!

बीज बोया है
तो अंकुरण अवश्य ही होगा,
पर
फल वैसा ही मिलेगा
जैसा बीज बोया है !!!

तकलीफ आपको किस बात से है
ये किसी और को नहीं
अपनों को ही पता होती है,
इसलिये समझो
तकलीफ कोई और नहीं
आपके अपने ही लोग देते हैं !!!

मंथन

जहाँ सत्य तेरी माता हो
ज्ञान तेरा पिता हो,
धर्म तेरा भ्राता हो,
दया तेरी सखी हो,
शांति तेरी देवी हो
और क्षमा तेरा सुपुत्र हो
तो समझ लेना
सर्वत्र तुझे सुख ही सुख है !!!

मंथन

आप

अपने प्रयासों को बदलिये

न कि लक्ष्य को,

क्योंकि

लक्ष्य बदलना

आपकी कमज़ोरी को प्रदर्शित कर देगा !!!